

**CLASS-10 (HINDI)**  
**स्पर्श (पद्य खंड)**  
**साखी**  
**कवि - कबीर**

**प्रतिपाद्य :** 'साखी' नामक पद्य पाठ में संत कबीरदास के कुछ दोहों को संकलित किया गया है । प्रस्तुत पाठ की साखियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि सत्य की साक्षी देता हुआ गुरु ही शिष्य को जीवन के तत्वज्ञान की शिक्षा देता है । यह शिक्षा जितनी प्रभावी होती है, उतनी ही याद रहने योग्य भी । कबीर ने जीवन के अनुभवों को दोहों में बाँध दिया है । कवि ने मधुर वाणी, अहंकार, विरह (जुदाई), निंदक (आलोचक) का महत्व आदि पक्षों को हमारे सामने प्रस्तुत किया है ।

**पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास**

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1 - मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर - मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता प्राप्त होती है, क्योंकि मीठी वाणी बोलने से मन का अहंकार समाप्त हो जाता है। यह हमारे तन को तो शीतलता प्रदान करती ही है साथ ही सुननेवालों को भी सुख की तथा प्रसन्नता की अनुभूति कराती है । इसलिए सदा दूसरों को सुख पहुँचाने वाली व अपने को भी शीतलता प्रदान करने वाली मीठी वाणी बोलनी चाहिए।

प्रश्न 2 - दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - संत कबीरदास ने अहंकारहीन जीवन का अर्थात् पवित्र मन का जोरदार समर्थन किया है । वे अहंकारहीन हृदय को प्रकाशित दीपक की तरह मानते हैं । जिस प्रकार दीपक में एक प्रकाशपुंज होता है जिसके प्रभाव के कारण अंधकार नष्ट हो जाता है। उसी प्रकार यदि हमारे हृदय में ईश्वर का वास हो तो

वहाँ 'मैं' अर्थात् अहंकार टिक नहीं सकता । मन में ज्ञान रूपी दीपक का प्रकाश फैलते ही मन में छाया भ्रम, संदेह और भयरूपी अंधकार समाप्त हो जाता है। तात्पर्य यह है कि पवित्र मन में 'अहंकार' का कोई स्थान नहीं है ।

प्रश्न 3 - ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?

उत्तर - ईश्वर कण-कण में व्याप्त है और कण-कण ही ईश्वर है। ईश्वर की चेतना से ही यह संसार दिखाई देता है। चारों ओर ईश्वरीय चेतना के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, लेकिन यह सब कुछ हम इन भौतिक आँखों से नहीं देख सकते। जब तक ईश्वर की कृपा से हमें दिव्य चक्षु (आँखें) नहीं मिलते, तब तक हम कण-कण में ईश्वर के वास को नहीं देख सकते हैं और न ही अनुभव कर सकते हैं। जैसे कस्तूरी की तलाश में मृग जंगल में भटकता रहता है , जबकि कस्तूरी की सुगंध तो उसकी नाभि में ही होती है।

प्रश्न 4 - संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - संसार में सुखी व्यक्ति वह है ,जो खा-पीकर सो गया है अर्थात् निश्चिंत है , जिसे संसार की कोई चिंता नहीं है । संसार में दुखी व्यक्ति वह है , जो जाग रहा है , रो रहा है अर्थात् संसार की स्थिति पर चिंतित हो रहा हो , चिंता की आग में जल रहा है । यहाँ 'सोना' निश्चिंतता का और 'रोना' चिंता अर्थात् दुःख का प्रतीक है । कवि ने 'सुखी-दुखी ' का प्रयोग इसलिए किया है कि सुखी लोग अपने स्वार्थ के प्रति चिंता करते हैं और दुखी लोग दूसरों की अर्थात् संसार की दुर्दशा पर आँसू बहा रहे हैं ।

प्रश्न 5 -अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर - अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने निंदक को अपने निकट रखने का सुझाव दिया है, क्योंकि वही हमारा सबसे बड़ा हितैषी है अन्यथा झूठी प्रशंसा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाले तो अनेक मिल जाते हैं। निंदक बुराइयों को दूरकर सद्गुणों को अपनाने में सहायक सिद्ध होता है। निंदक की आलोचना को सुनकर आत्मनिरीक्षण कर स्वभाव को शुद्ध व निर्मल बनाने में सहायता मिलती है।

प्रश्न 6 - 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़े सु पंडित होइ'-इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर - 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़े सु पंडित होइ' पंक्ति के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि संसार में पीव अर्थात् ईश्वर ही सत्य है। उसे पढ़े या जाने बिना, बड़े-बड़े ग्रंथों को, शास्त्रों को पढ़कर कोई भी पंडित (ज्ञानी) नहीं बन सकता है। यदि कोई प्रेम (प्रभु) का एक अक्षर पढ़ ले अर्थात् उसका महत्व समझ ले तो वही सबसे बड़ा ज्ञानी है। शेष सारे ज्ञान व्यर्थ हैं।

प्रश्न 7 - कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - कबीर की साखियों की भाषा की विशेषता है कि, यह जन भाषा है। उन्होंने जनचेतना और जनभावनाओं को अपनी 'सधुक्कड़ी' भाषा द्वारा साखियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया है। वे भिन्न-भिन्न स्थानों की यात्रा करके प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते थे, इसलिए अनेक भाषाओं के शब्द सहजता से उनकी रचनाओं में आ जाते थे। कबीर की साखियों में अवधी, राजस्थानी, पंजाबी, भोजपुरी आदि भाषाओं का स्पष्ट प्रभाव दिखता है, इसी कारण उनकी भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' भी कहा जाता है। कबीर की भाषा में संस्कृत, तद्भव तथा देशी शब्दों का अद्भुत (अनोखा) मेल देखने को मिलता है। उन्होंने संस्कृत शब्दों को पूर्वी हिंदी के संस्कारों में ढाल दिया है। इसलिए 'शीतल' का 'सीतल' हो गया, 'वियोगी' का 'बियोगी' हो गया। अपनी चमत्कारिक भाषा के कारण आज भी इनके दोहे लोगों की जुबान पर हैं।

**(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए**

1. बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।

उत्तर- इस पंक्ति का भाव है कि विरह (जुदाई, पृथक्ता, अलगाव) रूपी सर्प जिसके शरीर में घर कर जाता है, उसपे कोई मंत्र (इलाज) काम नहीं करता। इस विरह रूपी सर्प पर किसी भी मंत्र का प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि यह विरह ईश्वर को न पाने के कारण सताता है। जब अपने प्रिय ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है, तो वह विरह रूपी सर्प शांत हो जाता है, समाप्त हो जाता है अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति ही इसका स्थायी समाधान है।

प्रश्न 2. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढे बन माँहि।

उत्तर- इस पंक्ति का भाव है कि भगवान हमारे शरीर के अंदर ही वास करते हैं। जैसे हिरण की नाभि में कस्तूरी होती है, पर वह उसकी सुगंध (खुशबू) से प्रभावित होकर उसे चारों ओर ढूँढ़ता फिरता है। ठीक उसी प्रकार से मनुष्य ईश्वर को विभिन्न स्थलों पर तथा अनेक धार्मिक क्रियाओं द्वारा प्राप्त करने का प्रयास करता है, किंतु ईश्वर तीर्थों, जंगलों आदि में भटकने से नहीं मिलते। वे तो अपने अंतःकरण में झाँकने से ही मिलते हैं।

प्रश्न 3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।

उत्तर- इसका भाव है कि जब तक मनुष्य के भीतर 'अहम्' (अहंकार) की भावना अथवा अंधकार विद्यमान रहता है, तब तक उसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। 'अहम्' के मिटते ही ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है, क्योंकि 'अहम्' और 'ईश्वर' दोनों एक स्थान पर नहीं रह सकते। ईश्वर को पाने के लिए उसके प्रति पूर्ण समर्पण आवश्यक है।

प्रश्न 4. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोई।

उत्तर - इसका आशय यह है कि संसार में केवल बड़े-बड़े ग्रंथों को, शास्त्रों को पढ़कर कोई विद्वान या ज्ञानी नहीं बन सकता है। जो प्रेम का महत्त्व समझ ले, वही सबसे बड़ा पंडित है।

Refer link : <https://www.youtube.com/watch?v=AGyyvjVXMA&feature=youtu.be>